आर एन आई नं. DELHIN/2016/68357 दुमाही बाल पत्रिका
ISSN 2456-4753
प्लूटो
अंक 6 वर्ष 6
फरवरी - मार्च, 2022
गियान
शिराज़ हुसैन
चित्रः प्रिया कुरियन
एक खरगोश को रोकके बोले
मिस्टर फारसीदान
जानते हो 'खर' यानी गधा है
और 'गोश' के मतलब कान
खरगोश इतना कहके भागा
जेब में रख्खो गियान
पीछे देखो नन्हा चीता
साथ में अम्मीजान
मूल्य ₹ 60

पीपल से खकरा का झाड़
खड़खड़ खड़खड़ करता
मैं भी खड़ा खड़ा खिड़की में
बड़बड़ बड़बड़ करता
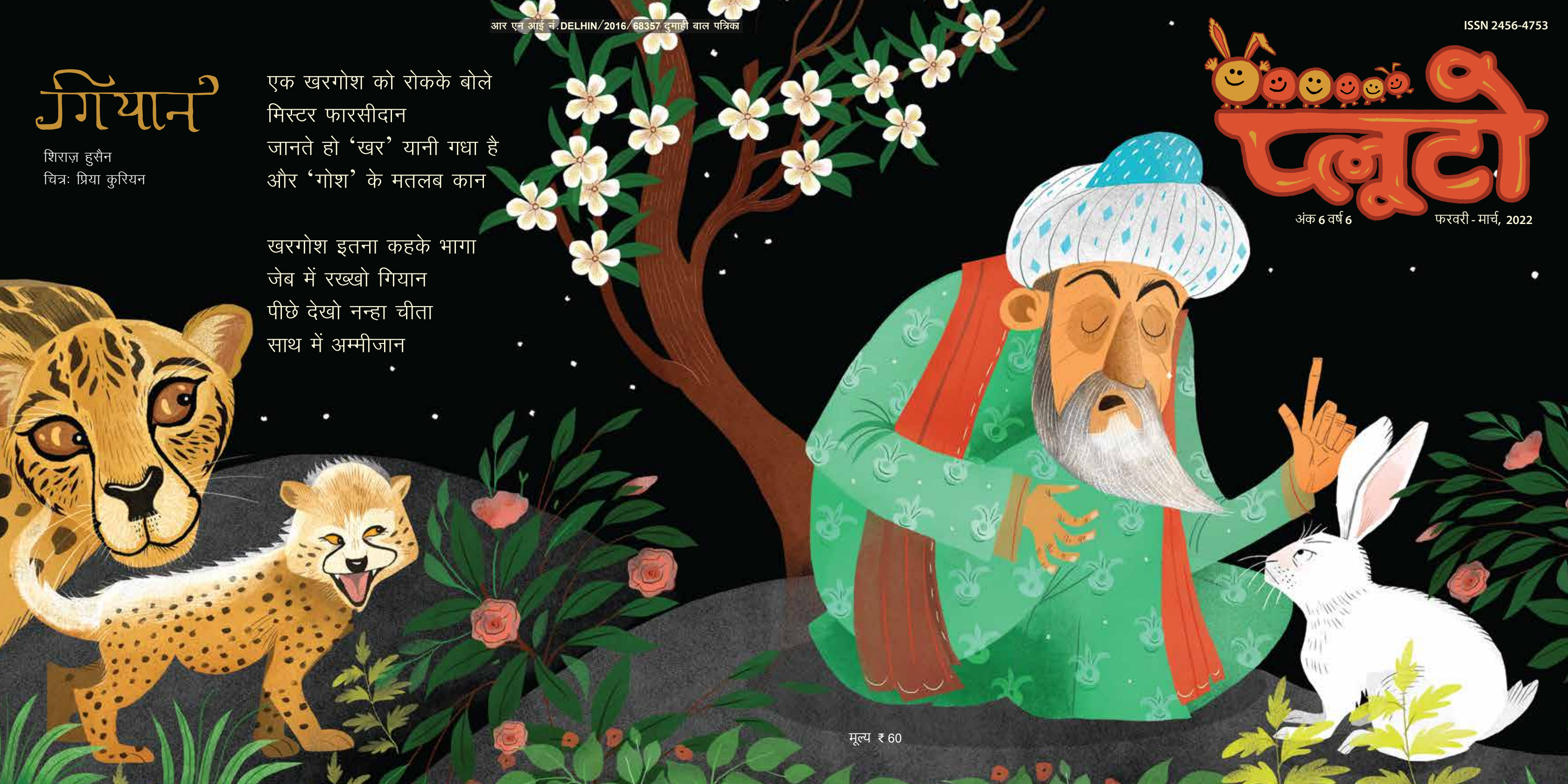
छोटा साबुदाना

चित्रः प्रिया कुरियन

नाक में उँगली घुमाना
जो मिले उसे बाहर लाना
उँगलियाँ उस पर फिराना

क्या मिलेगा इससे भाई?
एक छोटा साबुदाना

विकि सरकार
चित्रः अतनु राय

सर्दियों की छुट्टियों में
हम बैट-बल्ला खेल रहे थे।
मेरा दोस्त बिट्टू बॉल मारने
में ज़मीन पर गिर पड़ा।
मैंने कहा, “बुद्धू, ऐसे खेलते
हैं क्या!”
थोड़ी देर बाद मैं भी गिर
पड़ा।
तब मैंने बिट्टू की तरफ
नहीं देखा।

अंक 6 वर्ष 6, फरवरी-मार्च, 2022 प्लूटो
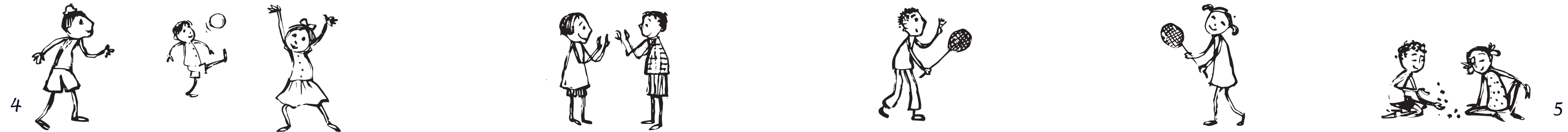
बारिश की बूँदें
चींटी के बिल में

धक-धक धक-धक
धरती के दिल में

श्याम सुशील
चित्रः शिवम चौधरी

हुमैरा मिर्ज़ा, पाँचवीं, बलरामपुर, उ.प्र.
चित्रः उमा मजूमदार

हमारे घर कई सालों से एक तोता था। उसका बड़ा-सा पिंजरा था। हम जो खाते वही उसे भी देते। वह दाल-चावल शौक से खाता था। आलू का पराँठा उसे बहुत पसन्द था। एक टुकड़ा खाकर वह और माँगने के लिए चिल्लाता था।

एक सुबह वह पिंजरे में नहीं था। सब उदास हो गए। किसी ने नाश्ता नहीं किया। अब्बू भी दुखी मन से दुकान चले गए।

दोपहर बीती। शाम हो गई। तभी नीम के पेड़ से तोते की आवाज़ आई। वो हमारा ही तोता था। मैंने उसे आवाज़ दी। अम्मी ने जल्दी से आलू का पराँठा बनाया। मैंने उसे पराँठा दिखाया। वो मुण्डेर पर आया। फिर पराँठा खाने पिंजरे में आ गया। मैं बहुत खुश हुई। हमने मज़े से रात का खाना खाया।

अब्बू बोले हमें तोते को छोड़ देना चाहिए। पर मैं राज़ी नहीं थी। कुछ दिनों बाद मुझे भी तोता उदास लगने लगा। एक सुबह अम्मी ने देखा तोता पिंजरे में नहीं है। इस बार उसके जाने का किसी को भी अफसोस नहीं हुआ।

शाम को वह लौट आया। नीम पर बैठकर बोलने लगा। अम्मी ने मुण्डेर पर उसके खाने की चीज़ें बिखेर दीं। अब वह नीम पर रहता है। हम उसे रोज़ खाना देते हैं।

घर में कोई नहीं जानता। पर तुम्हें बताती हूँ। दूसरी बार उसके पिंजरे का दरवाज़ा मैंने ही खुला छोड़ दिया था।

साँड और मेंढकी

लेव तोल्सतोय

एक साँड झील के पास चला गया।
वहाँ मेंढक मेंढकियाँ थे। एक मेंढक को तो उसने कुचल भी डाला। बाकी पानी में भाग गए। एक मेंढकी का बच्चा अपनी माँ के पास गया और बोला, “ओह माँ, कितना बड़ा जानवर देखा है मैंने! मैं तो डर ही गया।”

“क्या मुझसे भी बड़ा था?” माँ ने पूछा।
“बहुत बड़ा।”
बूढ़ी मेंढकी ने खुद को फुला लिया और पूछा, “क्या वह इससे भी बड़ा था?”
“हाँ बड़ा था।”
मेंढकी ने खुद को और फुला लिया। “इससे भी बड़ा था?”
“हाँ और बड़ा था।”
बूढ़ी मेंढकी ने पूरा ज़ोर लगाकर अपने को और फुलाया और फट गई।
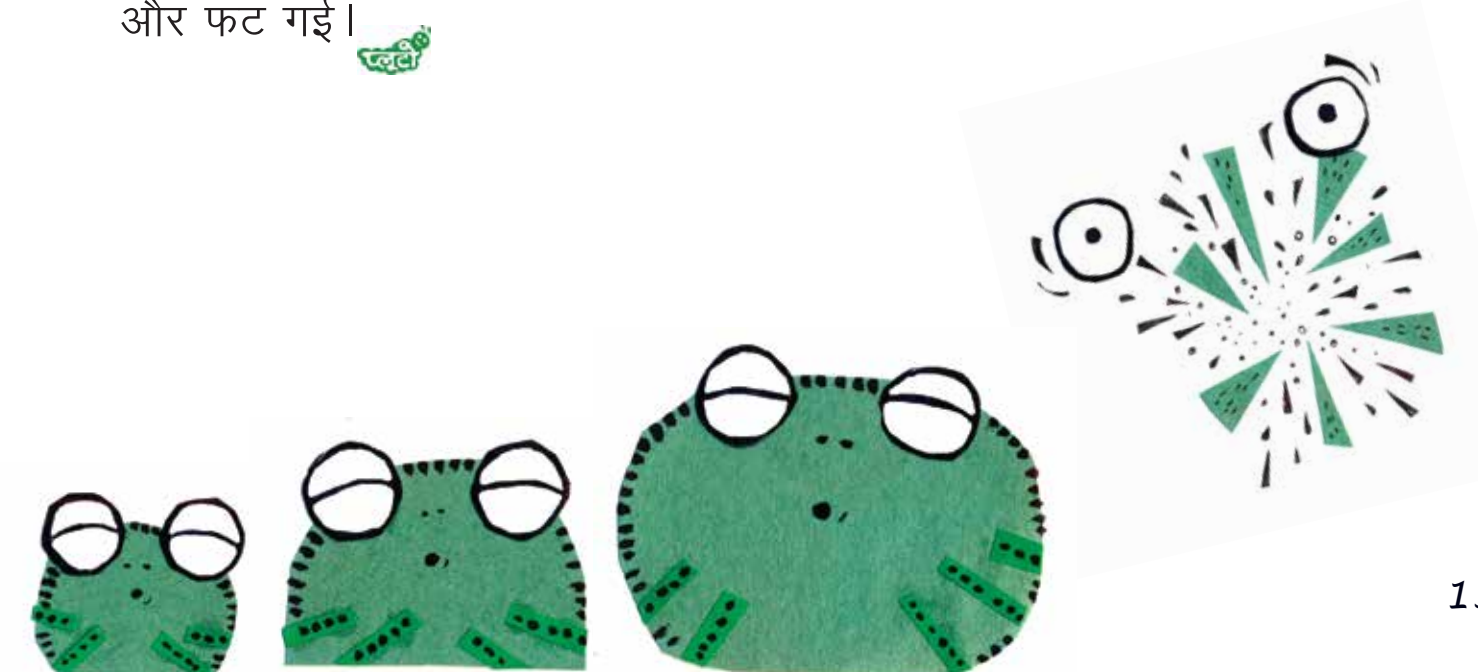
सबसे भारी आदमी की दो कहानियाँ

चन्दन यादव
चित्रः ऋषि सहानी

1

लियाकतगंज की बात है। कभी वहाँ दुनिया का सबसे भारी आदमी रहता था। अपने वज़न से वह बहुत दुखी रहता। वह किसी तरह इससे छुटकारा चाहता था।

उन दिनों ईश्वर अकसर बस्तियों के पास आया करते थे। तो सबसे भारी आदमी उनसे मिला और बोला, “मैं अपने वज़न से परेशान हो गया हूँ। चाहता हूँ कि मैं सबसे हलका आदमी हो जाऊँ।”

ईश्वर का काम ही लोगों की इच्छा पूरी करना है। उन्होंने कहा, “ऐसा ही हो।” और तुरन्त वहाँ से चले गए। भारी आदमी ने चलने के लिए कदम बढ़ाया पर वह वहीं लुढ़क गया।

2

लियाकतगंज का सबसे भारी आदमी अचानक गुम गया था। उसकी पत्नी ने बताया कि वह खाना खाने के बाद घर से निकला था। पर पूरी बस्ती में वह कहीं नहीं था। कई दिनों तक लोग उसे ढूँढते रहे। पर वह नहीं मिला।

लियाकतगंज के लोग
बताते हैं कि जिस दिन
सबसे मोटा आदमी गायब
हुआ, उस दिन बस्ती के
आकाश में एक
विशालकाय गुब्बारा उड़ता
हुआ देखा गया था।

घर में ताला लगाते हैं

विनोद कुमार शुक्ल
चित्रः तापोशी घोषाल
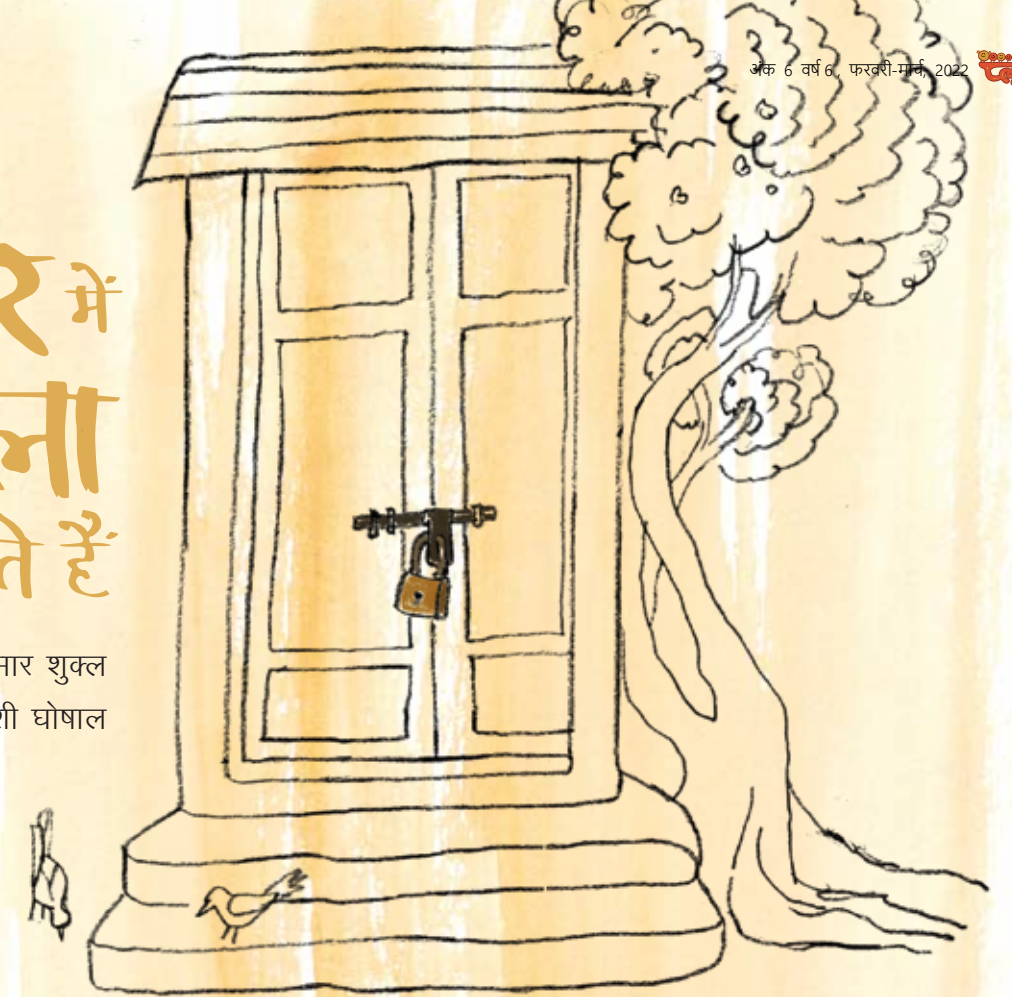
घर में ताला लगाते हैं
तो घर को कैद कहाँ करते हैं
घर जहाँ रहता है
वहीं रहता है
घर खुला रहता है
तो भी जाता नहीं

This space needs something.

अंक 6 वर्ष 6, फरवरी-मार्च, 2022

हमारा पन्ना

चित्र: अभिज्ञान मिश्रा,
चौथी, मुम्बई

हमारा पन्ना

साँप

घर में घुसा साँप
साँप है ज़हरीला
बारिश में हुआ सब कुछ गीला
मेरी शर्ट का रंग पीला
मेरा भाई ईमानदार
शर्ट है शानदार
मम्मी ने बनाई सब्ज़ी मसालेदार
हमारे घर में आए रिश्तेदार
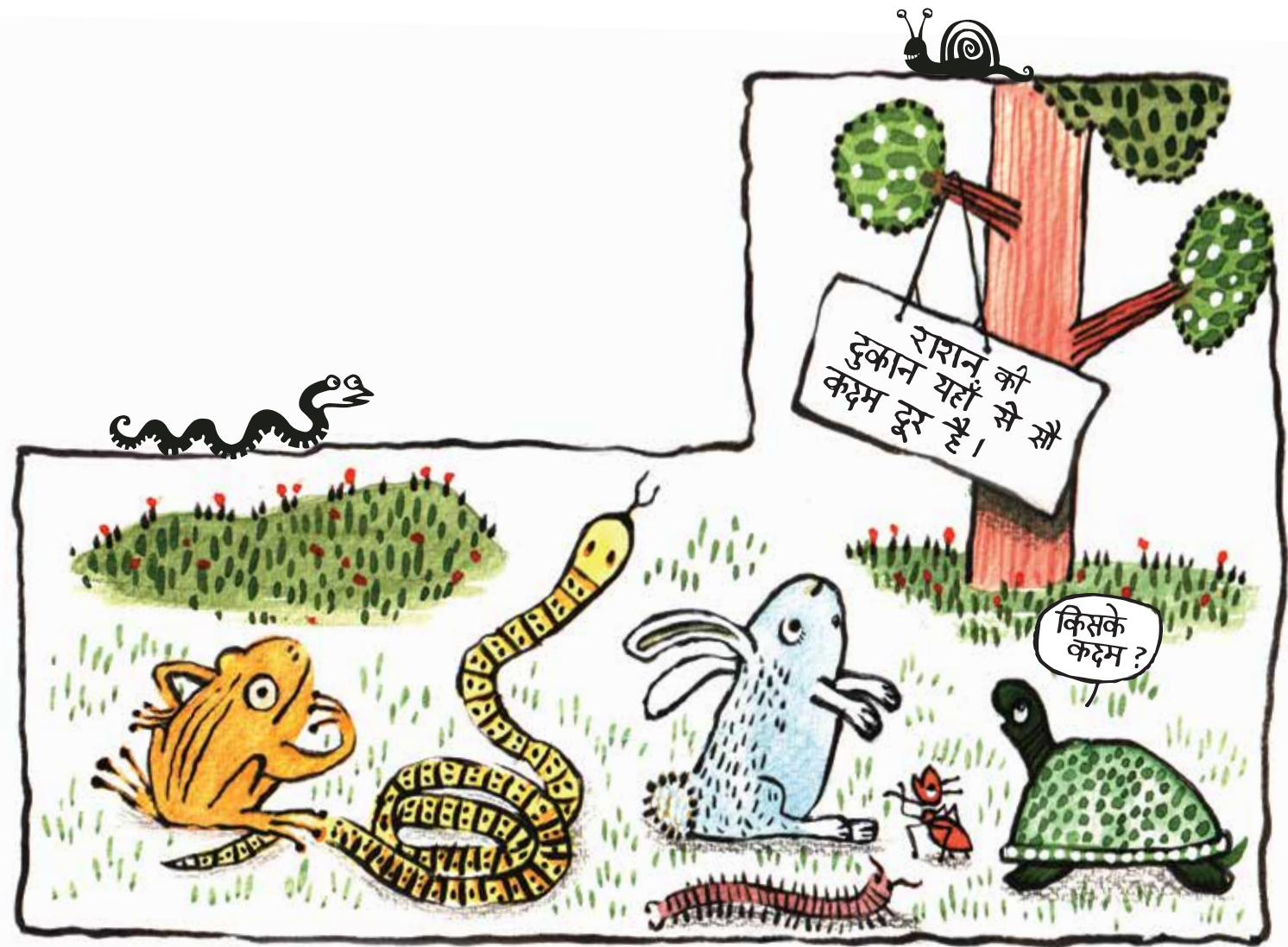
उर्वांग वर्मा, सात साल, सागर म प्र
चित्रः जिगीशा पसरीचा

कॉलोनी में आया दुकानदार
दुकानदार के पास सब्ज़ी मस्त
मेरे पापा हुए पस्त
और सूरज हुआ अस्त
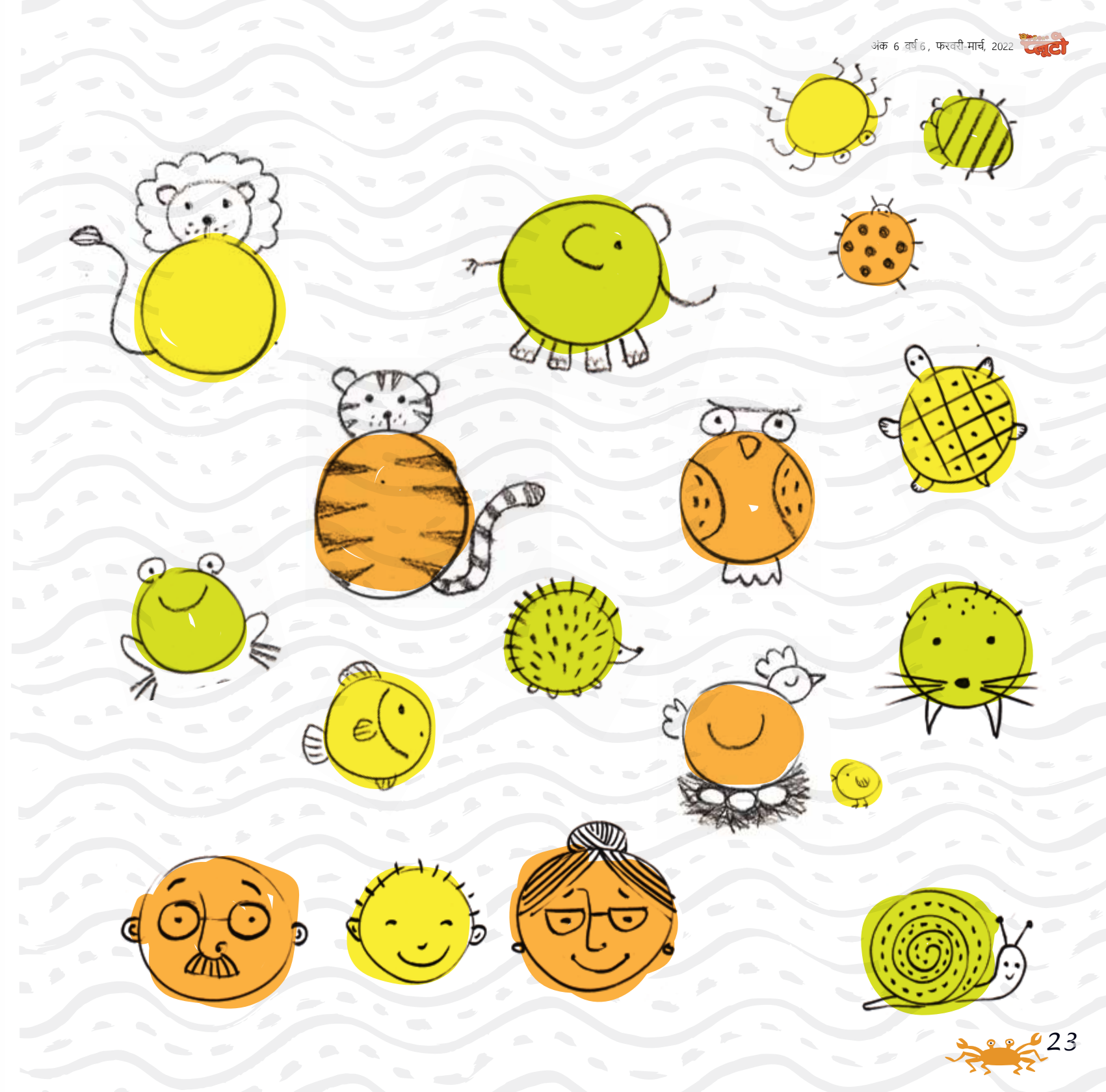
बच्चों से बराबरी से पेश आने का उन्होंने यह तरीका निकाला है।

निधि गौड़
चित्रः प्रोइति रॉय

ये मेरा घर है।
यहाँ मेरे मम्मी-पापा,
दादा-दादी और मेरा
भाई रहता है।

मेरा भाई मुझसे बड़ा है।

यहाँ सब कुछ
बहुत ऊँचा है।
कुर्सी।
मेज़।
शीशा।

सिर उठाकर देखो तो
पापा की नाक के
बाल दिखते हैं।

मम्मी की नाक में
भी बाल हैं।

मेरी नाक में नहीं हैं।

मैंने इस घर में अपना
एक घर बनाया है।

मम्मी की साड़ी से। मैं यहाँ रहती हूँ।

बड़ों को अब मुझ
से बात करनी होती है तो
वो मेरे घर मे आते हैं।

मेरे घर में वो भी
मेरे जितने लगते हैं।

हमारा पन्ना

दोनों रूठ गए!

प्रत्यूष मालवीय, सातवीं, भोपाल
चित्रः प्रोइति रॉय
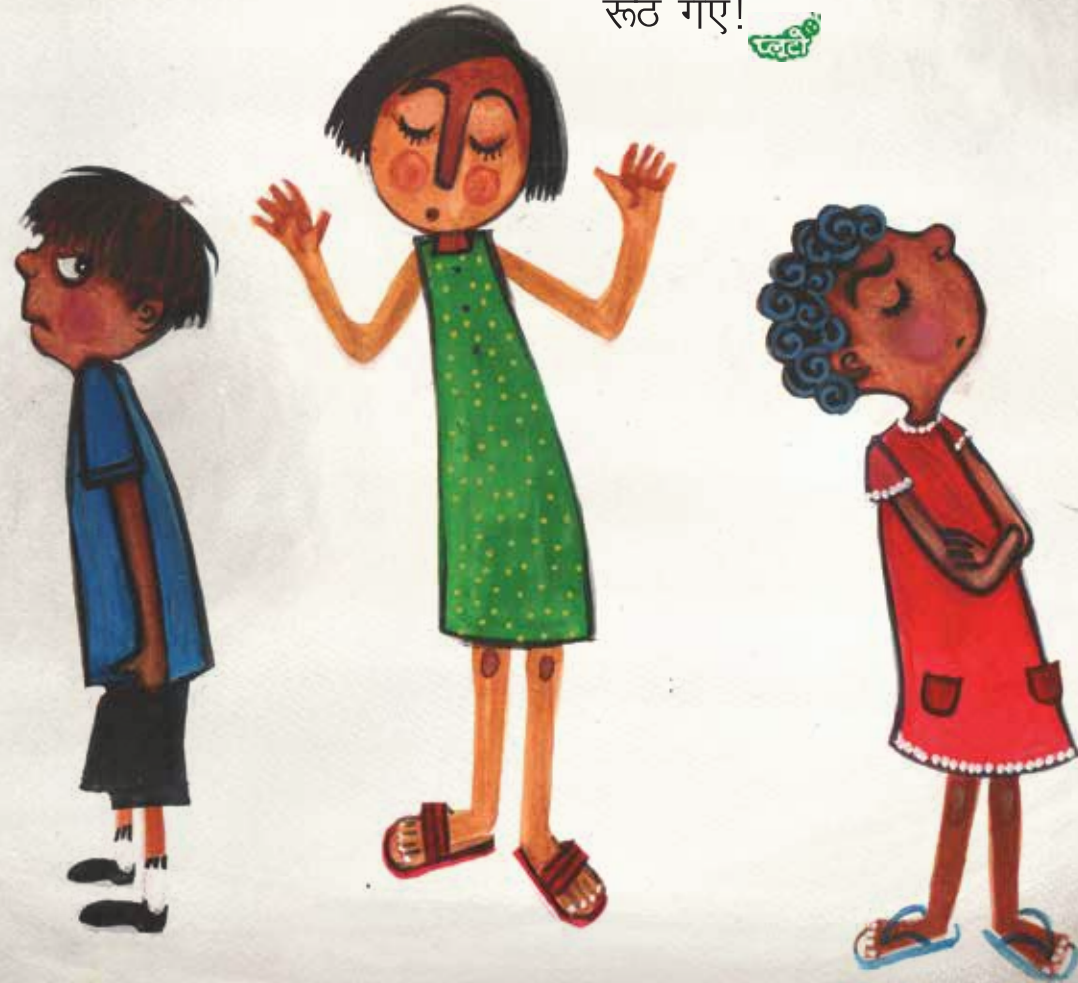
आज जब मैं अपनी क्लास में पहुँचा तो मामला गरम था। मेरे दो दोस्तों की लड़ाई हो गई थी। दोनों मुझसे पूछ रहे थे, "तू मेरी तरफ आएगा या उसकी?" मैंने कहा, "मैं किसी की तरफ नहीं आऊँगा। मैं दोनों के साथ रहूँगा।" फिर दोनों मुझसे रूठ गए!

खोई चिड़िया

तनिष्का हतवलने, दस साल, भोपाल
चित्रः प्रोइति रॉय

एक चिड़िया गई गुम
आओ ढूँढें हम और तुम
बच्चे उसके छोटे दो
कोई उनको समझा दो

हमारा पन्ना
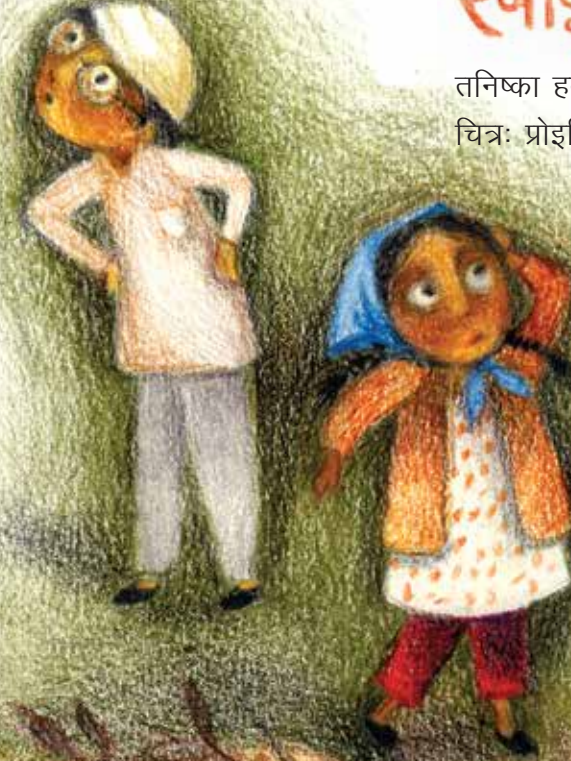
इकतारा द्वारा विकसित

दुमाही बाल पत्रिका

अवधि	अंक	सदस्यता दर (पंजीकृत डाक शुल्क सहित)
एक साल	6	₹ 425
दो साल	12	₹ 850
तीन साल	18	₹ 1275

एक प्रति - ₹ 60 (डाक खर्च अतिरिक्त)

I'll add something here

सम्पादन - सुशील शुक्ल, शशि सबलोक
उपसम्पादक - चन्दन यादव, निधि गौड़
डिज़ाइन - प्रोइति रॉय
आवरण चित्र - प्रिया कुरियन
वितरण - राजेन्द्र परमार, अनीता शर्मा

मुद्रक तथा प्रकाशक संजीव कुमार द्वारा तक्षशिला पब्लिकेशन–तक्षशिला एजुकेशनल सोसाइटी की इकाई के लिए मल्टी कलर सर्विसेज़, शेड नं. 92, डी.एस.आई.डी.सी., ओखला इंडस्ट्रियल एरिया, फेज़ 1, नई दिल्ली 110020 से मुद्रित एवं सी-404, बेसमेंट, डिफेंस कॉलोनी, नई दिल्ली 110024 से प्रकाशित, सम्पादक - सुशील शुक्ल

भुगतान विवरण - बैंक ड्राफ्ट/चेक इकतारा ट्रस्ट के नाम नई दिल्ली में देय। ऑनलाइन ट्रांसफर आई.सी.आई.सी.आई. बैंक, बी-78 डिफेंस कॉलोनी, नई दिल्ली, खाता नम्बर 630001028225, IFSC Code - ICIC0006300 में भेजें।

ऑनलाइन खरीद की लिंक
www.ektaraindia.in/ektarashop

भुगतान और वितरण की पूरी जानकारी
publication@ektaraindia.in पर दें।

इकतारा–तक्षशिला का बाल साहित्य एवं कला केन्द्र
ई-1/212 , अरेरा कॉलोनी, भोपाल 462016
फोन - 0755-4939472
9109915118 9630097118
ई-मेल - pluto@ektaraindia.in
वेबसाइट - www.ektaraindia.in

तीलियों का सितारा

चार तीलियाँ लो।

इनके मसाले वाले हिस्से को तोड़कर अलग कर दो।

हर तीली को बीच से ऐसे तोड़ो कि दोनों टुकड़े पूरी तरह अलग ना होकर जुड़े रहें।

अब इनको चित्र में दिखाए तरीके से रखो।

बीचोंबीच पानी की एक बूँद डालो।

क्या बना?